इकाई 11 अरब : हमले एवं विस्तार*

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य
11.1 प्रस्तावना
11.2 7वीं-8वीं शताब्दी में इस्लाम का उदय और प्रसार
11.3 *चचनामा*
11.4 सिंध पर विजय
11.5 अरब प्रशासन
11.6 सिंध पर विजय : बग़ैर परिणामों की जीत?
11.7 सारांश
11.8 शब्दावली
11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर
11.10 संदर्भ.ग्रंथ

11.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- प्रारंभिक मध्यकालीन युग में अरब से विदेशी हमलों को समझने के लिए पृष्ठभूमि को जान सकेंगे;
- अरबियों की सिंध पर विजय के स्रोतों को जान सकेंगे;
- अरबियों द्वारा सिंध पर विजय करने के कारणों को जान सकेंगे;
- सिंध पर विकास के चरण;
- सिंध विजय के औपनिवेशिक स्वरूप को जान सकेंगे; और
- अरब और भारतीय संस्कृतियों के बीच सांस्कृतिक सम्मिश्रण को जान सकेंगे।

11.1 प्रस्तावना

अभी तक की इकाइयों में हमने प्राचीन भारत के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक अथवा सांस्कृतिक पहलुओं के विषय में पढ़ा है। उस काल की विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर इतिहासकार इसे प्राचीनकालीन इतिहास कहते हैं। इसी प्रकार, इसके बाद आने वाले काल की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ थीं, जिनके कारण उसे मध्यकाल कहते हैं। पश्चिम एशिया में इस्लाम का उदय और विश्वभर में मुस्लिम विजय प्रारंभिक मध्यकाल की विशेषता है। इस इकाई में हम भारतीय उपमहाद्वीप में एक ही परस्पर संबंधित विकास का अध्ययन करेंगे। यह भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में अरबों की सिंध पर विजय है।

भारतीय इतिहास में प्रारंभिक मध्यकाल

प्रारंभिक मध्यकाल प्राचीन से मध्यकालीन युग में संक्रमण का चरण है। उत्तर भारत के संबंध में, सल्तनत चरण से पहले का काल प्रारंभिक मध्यकाल कहलाता है। अनेक

*डॉ. जया प्रियदर्शिनी, इतिहास अध्ययन केन्द्र से पी.एच.डी., जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

इतिहासकार इसे उत्तर-गुप्तकाल भी कहते हैं। यह भारतीय इतिहास में भिन्न कालक्रम रचना को बताता है जिसकी अपनी विशेषताएँ थीं जो इसके पहले अथवा बाद के चरणों में नहीं पाई जाती थीं। अकादमिक क्षेत्रों में ऐसे शब्दों के उपयोग की उत्पत्ति अपेक्षाकृत नई है। इसके उपयोग से पहले, मध्यकाल को अधिकतर भारत पर विदेशी अथवा मुस्लिम हमलों और शासन के संदर्भ में समझा जाता था। लेकिन मध्यकालीन भारतीय इतिहास में गहराई से सूक्ष्म अध्ययनों द्वारा यह पता चला कि इस क्षेत्र में पाई जाने वाली विभिन्न सांस्कृतिक विशेषताओं को एक शब्द ''मध्यकाल'' के अंतर्गत एक साथ इकट्ठा नहीं रखा जा सकता है। आरंभ में, निहाररंजन रे ने मध्यकालवाद का एक बहु-आयामी चरित्र-चित्रण करने का प्रयास किया था। उन्होंने मध्यकाल में तीन उप-कालों पर विचार किया था, जो हैं :

i) 7वीं से 12वीं शताब्दी

ii) 13वीं से 16वीं शताब्दी के आरंभिक 25 वर्ष तक

iii) 16वीं शताब्दी के प्रथम एक-चौथाई भाग से 18वीं शताब्दी के अंत तक

बी.डी. चट्टोपाध्याय जैसे इतिहासकारों के अनुसार, इतिहास की काल अवधियाँ सांस्कृतिक रूप से इतनी विविध होती हैं कि उन्हें आसानी से एक साथ श्रेणीकृत नहीं किया जा सकता है। इसलिए, इन उप-कालों को भी भिन्न कालों में विभाजित किया जा सकता है। जिनकी अपनी विशिष्ट विशेषताएँ हैं। इस तर्क के अनुसार यह कहा जा सकता है कि उत्तर-गुप्तकाल या प्रारंभिक मध्यकाल में भी अपनी विलक्षणताओं के साथ विभिन्न चरण थे। उदाहरण के लिए, 7वीं से 10वीं और 10वीं से 12वीं शताब्दिों को भिन्न आधारों पर विभेदित किया जा सकता है। एक ऐसा आधार 8वीं शताब्दी में अरबों की सिंध पर विजय अथवा 10वीं से 12वीं शताब्दियों के बीच उत्तर भारत में तुर्कों के हमलों का बढ़ना था।

11.2 7वीं-8वीं शताब्दी में इस्लाम का उदय और प्रसार

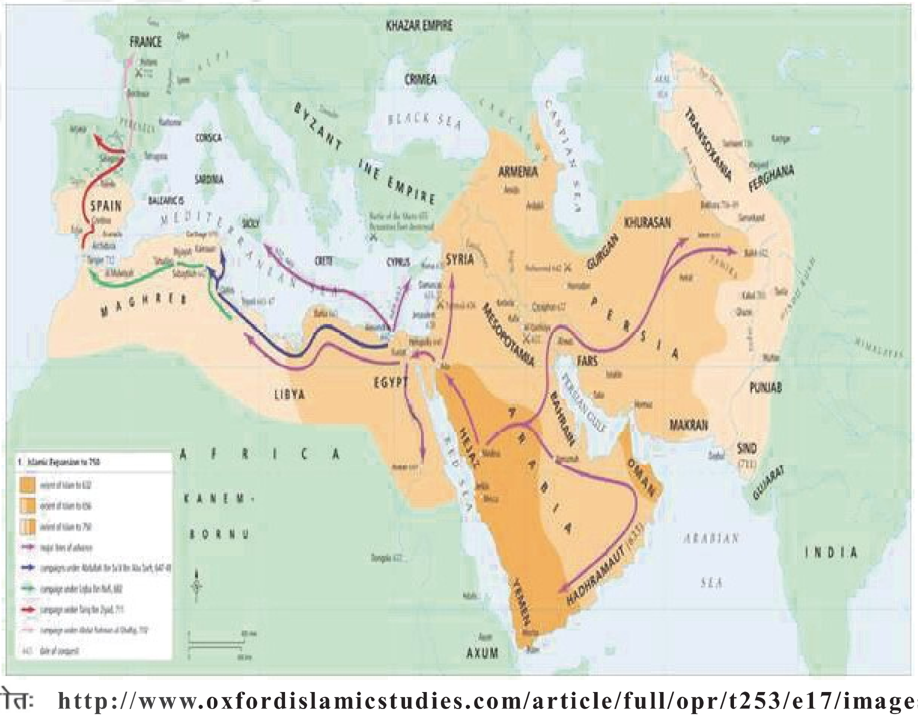

स्रोतः http://www.oxfordislamicstudies.com/article/full/opr/t253/e17/images/0195334012.spread-of-islam-the.1.jpg |

इस्लाम धर्म की स्थापना 7वीं शताब्दी में मोहम्मद द्वारा की गई, जो मक्का का एक अरबी व्यापारी था। उस समय, अरब के क्षेत्र पर अनेक लड़ाकू बेदूई (Bedouin) जनजातियों का निवास था जो प्रतिमा पूजक धर्मों को मानते थे और अनेक देवी-देवताओं की पूजा करते थे। वे निरंतर एक-दूसरे के साथ आर्थिक अथवा धार्मिक मुद्दों पर युद्ध करते रहते थे। लेकिन मोहम्मद ने इन अरबी जनजातियों को अपनी एक ईश्वरवादी शिक्षाओं से एकीकृत किया। संभवतः यह मोहम्मद का अरब में सबसे बड़ा योगदान है। एकता लाने के साथ ही, उनके नए धर्म ने भावी मुस्लिम राज्यों की राजनीतिक और आर्थिक नीतियों को भी अत्यधिक प्रभावित किया।

उनकी मृत्यु के पश्चात्, अरबी प्रायद्वीप के भीतर और उसके बाहर मुस्लिम राज्य व्यवस्था का तीव्र विस्तार रसूदीन और उम्मयद खलीफाओं के अंतर्गत हुआ। विस्तृत साम्राज्य मध्य एशिया से लेकर मध्य-पूर्व और उत्तर अफ्रीका से लेकर अटलांटिक महासागर तक फैल गया। कुछ विद्वानों का मत है कि अरबी प्रायद्वीप में एक राज्य का राजनीतिक गठन और धार्मिक एकता तथा सैन्य लाभबंदी पूर्व-आधुनिक काल में सबसे बड़े साम्राज्य की स्थापना के सबसे महत्त्वपूर्ण कारण थे। इस साम्राज्य का गठन इस्लामिक खलीफा द्वारा लगभग 1.3 करोड़ वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में किया गया था। अपने धर्म के रूप में इस्लाम और अपने नए साम्राज्य के रूप में लूट के साथ अरबी विविध प्रकार के व्यक्तियों के बीच रहे जो भिन्न-भिन्न नस्लों के थे। उनके बीच उन्होंने विजेताओं के रूप में एक अल्पसंख्यक शासन का गठन किया। लेकिन युद्धों के क्रमिक रूप से अंत और आर्थिक जीवन के विकास ने प्रशासकों और व्यापारियों के एक नए शासक वर्ग को उत्पन्न किया जो भिन्न नस्लों, भाषाओं और जातीयता के थे। इस तरीके से मुस्लिम जनसंख्या अरबी प्रायद्वीप में और उसके आस-पास फैलती रही। भारतीय उपमहाद्वीप में सिंध पर विजय मुस्लिम जगत द्वारा इस उद्यम का एक विस्तार था।

11.3 *चचनामा*

जहां तक सिंध पर अरब विजय के ऐतिहासिक स्रोतों का सरोकार है, तो इनका अत्यधिक अभाव है। यहां तक कि अरब स्रोत भी इस घटना के बारे में आरंभिक इस्लाम के उदय और विस्तार की चर्चा करते समय सिर्फ संक्षिप्त, अस्पष्ट विवरण अथवा संदर्भ प्रदान करते हैं। इस विजय का विवरण अल-बालाधुरी के *फतह-अल बलदान* के कुछ पृष्ठों तक ही सीमित है। अल-मैदानी में ट्रांसोक्सानिया पर अरब विजय के बारे में भरपूर जानकारी है। लेकिन उनके वर्णन में सिंध का बहुत कम उल्लेख है। लेकिन, इस विषय पर अरब स्रोतों के इस अभाव की क्षतिपूर्ति काफ़ी हद तक एक फ़ारसी ग्रंथ *चचनामा* द्वारा कर दी गई है, जिसे अली कूफी ने 1226 सी.ई. में लिखा था। यह एक विश्वसनीय ऐतिहासिक ग्रंथ है जिसके लिए यह दावा किया जाता है कि यह इस विजय से संबंधित इतिहास के लुप्त अरबी विवरण का अनुवाद है। *चचनामा* एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जिसे सिंध पर अरब विजय की विस्तृत जानकारी प्रदान करने का श्रेय दिया जा सकता है।

चचनामा में 680-718 सी.ई. तक का सिंध के इतिहास का विवरण है। व्युत्पत्ति के रूप से *चचनामा* का अर्थ है ''चच की कहानी''। वह सिंध के एक हिंदू ब्राह्मण शासक थे। यह पुस्तक एक फ़ारसी ग्रंथ है जिसे उच्च शहर में लिखा गया था, जो उस काल में सिंध की राजनीतिक राजधानी था। वर्तमान में, यह पाकिस्तान के करांची के बंदरगाह शहर से लगभग 70 किलोमीटर उत्तर में स्थित देखा जा सकता है।

मुस्लिम भारत के एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत के रूप में *चचनामा* को उतना महत्त्व नहीं मिला जितना मिलना चाहिए था। इसके कुछ भाग का अंग्रेज़ी में 'इलियट और डॉसन' द्वारा

अनुवाद किया गया था और फ़ारसी से अंग्रेज़ी में पूर्ण अनुवाद 1900 में मिर्ज़ा कालिशबेग द्वारा किया गया था जो पहले सिंधी उपन्यासकार थे। इस फ़ारसी पुस्तक का पहला और एकमात्र संस्करण 1939 में आया।

चचनामा को पर्याप्त महत्त्व नहीं दिया गया क्योंकि अधिकांश इतिहासकारों, जैसे कि औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी इतिहासकारों, ने इसे भारतीय उपमहाद्वीप में आरंभिक रूप से इस्लाम के आने के सिर्फ एक वृत्तांत के रूप में देखा है। लेकिन अली कूफ़ी का यह दावा है कि *चचनामा* 8वीं शताब्दी की एक अरबी पुस्तक का अनुवाद है जो यह दर्शाता है कि इस्लाम के आने के अतिरिक्त यह अन्य प्रकार की जानकारी का भी भंडार हो सकता है। वास्तव में, यह पुस्तक वाकई अधिक जानकारी प्रदान करती है। योहानन फ्राइडमेन, मनन अहमद आसिफ़ इत्यादि जैसे विद्वान जिन्होंने इसे पढ़ा और इसका विश्लेषण किया है, तर्क करते हैं कि इसमें विविध प्रकार की व्यापक जानकारी है और समस्त उपलब्ध आंकड़ों को वर्गीकृत और विश्लेषित करने के लिए कोई क्रमबद्ध प्रयास नहीं किए गए हैं। इसके विस्तृत परीक्षण के बाद उन्होंने प्रमाणित किया कि इसमें सिंध के इतिहास, उसकी सरकार और राजक्रांति की प्रासंगिक जानकारी है। इसलिए, जिन विद्वानों ने यह पुस्तक पढ़ी है वे इस मध्यकालीन स्रोत को समग्रता से पढ़ने और समझने की आवश्यकता को समझते हैं और इसे सिर्फ आरंभिक इस्लाम के आने और सिंध पर उसकी विजय पर एक पुस्तक के रूप में नहीं देखते हैं।

चचनामा का वर्णन/वृत्तांत

जैसा कि पहले कहा गया है, फ्राइडमैन और अहमद आसिफ़ जैसे इतिहासकारों ने इसे सिर्फ सिंध विजय के इतिहास के रूप में देखे जाने के मत का खंडन किया है। उनका विस्तृत अध्ययन अन्य पहलुओं पर भी प्रकाश डालता है। फ्राइडमैन का मत है कि पुस्तक को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है। पैगंबर मोहम्मद की तारीफ़ में विविध वर्णन से आरंभ करते हुए इसमें अरब योद्धाओं और अरबी पांडुलिपि जिसमें मोहम्मद बिन कासिम के सिंध में सैन्य कारनामों का वर्णन है। साथ ही, इसमें अरबों के सिंध पर हमले का भी वर्णन है।

राजा चच से आरंभ करते हुए, इसमें उनके उत्तराधिकारियों के गूढ़ वर्णन दिए गए हैं। इसमें चच बिन सिलाइज नामक एक ब्राह्मण की सिंध के राजा के मुख्यमंत्री होने से लेकर राजा की मृत्यु के पश्चात् रानी की सहायता से अपने सत्ता में आने की यात्रा के वर्णन हैं। एक राजा के रूप में, चच ने किलों पर कब्ज़ा करके, संधियों पर हस्ताक्षर करके और हिंदू तथा बौद्ध जनता दोनों के दिल जीतकर सिंध के एक सफल राज्य की स्थापना की थी। यह उनकी आक्रामक, रक्षात्मक और उदार नीतियों का मिश्रण था जिसके कारण उनके लिए लंबे समय तक सिंध पर राज्य करना संभव हो पाया था। लेकिन एक अच्छे शासक के रूप में उनकी सफलता उनके दो पुत्रों दहर और दहरसिया के बीच उत्तराधिकार के युद्ध के कारण खत्म हो गई। जैसा कि पुस्तक में वर्णन है, दहर सत्ता में आ गया और वही था जिसने अरब बागियों, समुद्री डाकुओं और युद्ध सरदारों का स्वागत किया। इसने 8वीं शताब्दी में ईराक के मुस्लिम राज्य के क्रोध को भड़का दिया। अहमद आसिफ के अनुसार, यह पुस्तक तीन भागों में विभाजित है। पहले भाग में तीन परस्पर जुड़े विषयों राजा के लिए वैधता की आवश्यकता, सलाहकारों की अच्छी परिषद और न्यायोचित रूप से शासित राज्य व्यवस्था के गठन की आवश्यकता की चर्चा की गई है। दूसरे भाग में, खलीफाओं से बालिद के इतिहास का वर्णन है। इसमें खलीफा उमर के काल की बात की गई है (लगभग 634-644 सी.ई.) जब मुस्लिम सैन्य अभियान सिंध और हिंद की ओर बढ़ रहे थे। इसमें मकरान, जबूलिस्तान और कंधार जैसे क्षेत्रों में भेजे गए शासकों के साथ ही विद्रोही मुस्लिम समूहों

का भी विवरण है जो सीमांत क्षेत्रों की ओर बढ़ रहे थे। दमस्कस में राज्य के विरुद्ध षड्यंत्र करने वाली विद्रोही सेनाओं की भी चर्चा की गई है। यहां यह उल्लेख किया गया है कि ऐसे समूहों के साथ युद्ध करने और क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए इराक के शासक/नियंत्रक ने एक युवा सेनापति मोहम्मद बिन कासिम को 711 सी.ई. में सिंध भेजा था। यह तब था जब मकरान, दाबोल अथवा देवुल, नेरुन के क्षेत्रों पर हमला करके उन पर कब्ज़ा कर लिया गया था। राजा दहर की सेनाएं सिंधु नदी के तटों पर हुए युद्ध में हार गई थीं। सिंध के राजा को हराने के बाद, कासिम ने आरोर, ब्राह्मनाबाद और मुलतान के क्षेत्रों पर भी कब्ज़ा कर लिया। इस प्रकार, दहर से अरब विद्रोहियों और समुद्री डाकुओं का समर्थन करने का बदला लिया गया।

अंतिम वृत्तांत में कासिम के पतन पर विस्तार से चर्चा की गई है। जैसा कि इसमें बताया गया है, कासिम को बगदाद के खलीफा के आदेश पर दहर की बेटियों द्वारा यौन हिंसा का आरोप लगाए जाने पर मरवा दिया गया था। पुस्तक के अंतिम भाग में, अच्छे शासन, अच्छे सलाहकार मंडल और एक सफल राज्य-व्यवस्था के निर्माण के लिए आवश्यक राजनीतिक सिद्धांत की बात की गई है। इस भाग में चच और कासिम दोनों के सैन्य अभियानों की चर्चा की गई है। अहमद आसिफ़ के अनुसार, पुस्तक में नीति और कराधान, सेनाध्यक्षों के बीच निजी बातचीत और उनके उपदेशों और सपनों पर भाषण सम्मिलित हैं। इसमें राजनीतिक सिद्धांत और शासन पर महत्त्वपूर्ण जनों के वक्तव्यों की भी चर्चा की गई है।

बोध प्रश्न 1

1) अली कूफी कौन था? भारतीय इतिहास के अध्ययन में वह क्यों महत्त्वपूर्ण है?

....

....

....

....

....

....

....

2) *चचनामा* क्या है?

....

....

....

....

....

....

....

....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

11.4 सिंध पर विजय

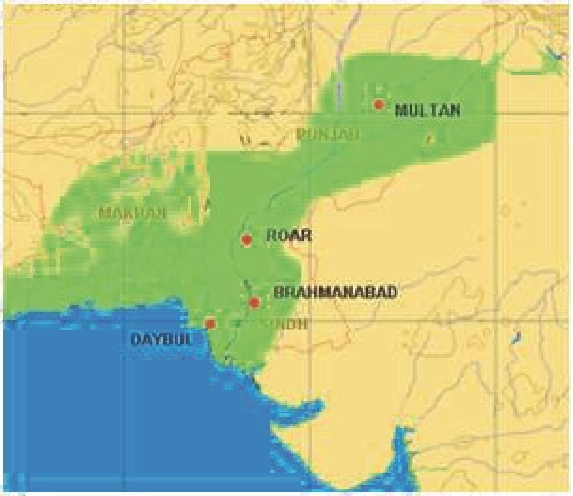

स्रोतः (https://en.wikipedia.org/wiki/Muhammad_bin_Qasim)।

सिंध का क्षेत्र आज के पाकिस्तान के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में स्थित है। भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी तट के इस क्षेत्र का लंबा इतिहास रहा है। प्राचीन काल से ही यह वाणिज्य और व्यापार का केंद्र रहा है। अरब व्यापारियों के अपने भारतीय और दक्षिण-पूर्वी एशियाई प्रतिपक्षियों के साथ सक्रिय व्यापारिक संबंध थे। उन्हें भारत के पश्चिमी तट के सागर मार्ग की जानकारी थी। वास्तव में, ये व्यापारी फ़ारस की खाड़ी में सिराफ़ और होरमूज़ से सिंध के मुख तक और फ़िर सपेरा और कैम्बे से होते हुए आगे कालीकट तक मालाबार तट के अन्य बंदरगाहों पर आते थे। अपने साथ भारतीय संपदा की खबरें और विलासिता की वस्तुएँ जैसे सोना, हीरा, रत्नजड़ित मूर्तियाँ आदि अरब ले जाते थे। क्योंकि भारत लंबे समय से अपनी संपदा के लिए प्रसिद्ध था, अतः अरब उस पर विजय पाना चाहते थे। अपने 'इस्लामीकरण' के बाद, उनके अंदर धर्म प्रचार की भावना थी जिसके कारण वे मध्य-पूर्व यूरोप, अफ्रीका और एशिया के अनेक क्षेत्रों में फैल गए।

अरबों की भारतीय महाद्वीप में सिंध के तटीय शहरों में घुसपैठ 636 सी.ई. से ही खलीफा उमर के शासनकाल में आरंभ हो गई थी, जो पैगंबर के दूसरे उत्तराधिकारी थे। लूट के अभियान, जैसा कि एक 637 सी.ई. में थाणे (बॉम्बे के निकट) में हुआ था, लंबे समय तक जारी रहे। लेकिन ये अभियान सिर्फ लूटपाट के लिए आक्रमण थे, विजय नहीं। क्रमबद्ध अरब विजय 712 सी.ई. में उम्मयद-खलीफा अल-वालिद के शासन काल में ही हुई थी। तभी सिंध को मुस्लिम साम्राज्य में सम्मिलित किया गया था।

जैसा कि हमने बताया है, भारतीय दौलत को पाने की कामना के साथ ही सिंध की विजय का कारण अरबों की इस्लाम के प्रसार की इच्छा भी थी। लेकिन तात्कालिक कारण समुद्री डाकू थे जिन्होंने दाबोल/देबुल अथवा कराची के तट के निकट कुछ अरब जहाजों को लूट लिया था। ऐतिहासिक प्रमाण दर्शाते हैं कि इन जहाजों में लंका के राजा द्वारा बगदाद के खलीफा और इराक के नियंत्रक/शासक अल-हज्जाज के लिए भी उपहार ले जाए जा रहे थे। लेकिन जहाज को समुद्री डाकुओं द्वारा सिंधु नदी के मुहाने पर लूट लिया गया और अरबों को दाबोल के बंदरगाह पर नज़रबंद कर लिया गया। सिंध के राजा दहर से इस अपमान की क्षतिपूर्ति के लिए प्रत्यर्पण और अपराधियों को दंडित करने की माँग की गई। लेकिन उन्होंने ऐसा करने से इंकार कर दिया। उन्होंने अपने इंकार का कारण समुद्री डाकुओं को नियंत्रित करने में अपनी अक्षमता बताया। लेकिन, उनका भरोसा नहीं किया गया बल्कि बगदाद ने उन पर समुद्री डाकुओं का संरक्षण करने का आरोप लगाया। अतः हज्जाज ने खलीफा वालिद से सिंध पर हमला करने की अनुमति ले ली। इसके बाद, राजा के विरुद्ध एक के बाद एक तीन सैन्य हमले किए गए। देबाल में मोहम्मद बिन कासिम द्वारा तीसरे हमले में दहर की हार हुई और वह मारा गया। इसके बाद, निरून, रेवाड़, ब्राह्मनाबाद, अलोर और मुलतान के सभी पड़ोसी शहरों पर कब्ज़ा कर लिया गया। इस प्रकार, सिंध राज्य पर अरबों द्वारा 712 सी.ई. में अंततः विजय प्राप्त कर ली गई।

मोहम्मद बिन कासिम – एक विजेता और उसके अभियान

वह एक 17 वर्ष का उम्मैयद सेनापति था जिसने सिंध की विजय का नेतृत्व किया था। यह किशोर विजेता सिकंदर के पदचिन्हों पर चलते हुए सिंधु घाटी में एक नए धर्म और एक नई संस्कृति को लेकर आया। *चचनामा* में वर्ष 209-711 सी.ई. के बीच इनका उल्लेख है। जन इराक के शासक हज्जाज ने सिंध के विरुद्ध अभियान का नेतृत्व इसे सौंपा था। कासिम हज्जाज का भतीजा था और एक कुशल सेनापति होने के कारण इसके चाचा द्वारा इसे मकरान के सीमांत जिले का सरदार बनाया गया था। उसे सिंध की दिशा में विजय करने का अभियान सौंपा गया था। सिंध के विरुद्ध कासिम के अभियान को बहुत सावधानी से तैयार किया गया था। इसकी सेवा का आधार सीरिया के *गुंड* के 6000 सैनिक और विभिन्न अन्य सैन्य दल भी थे। पूर्व की ओर के अभियान की योजना का आधार शीराज था। हज्जाज के आदेश से, कासिम वहां महीनों तक अपने सैन्य दलों पर केंद्रित करते हुए रहा। यहां से, वह मोहम्मद इब्न हारून के साथ (जो इस कूच के दौरान मर गया था और जो सीमांत जिले के नेतृत्व में उसका पूर्ववर्ती था) पूरब की ओर बढ़ा। जैसा कि अरब स्रोत बताते हैं, 8वीं शताब्दी में सिंधु घाटी पर दहर नामक राजा का शासन था। वह राजा चच का पुत्र और उत्तराधिकारी था। अरब सेनाएं इस घाटी पर विजय पाना चाहती थीं। *चचनामा* के अनुसार, चच का विशाल साम्राज्य था जो मकरान, कश्मीर आदि तक विस्तारित था। लेकिन उनके पुत्र द्वारा शासित राज्य इतना विशाल नहीं था और इसमें सिर्फ सिंधु का निचला क्षेत्र था जिसमें ब्राह्मनाबाद, आरोर, देबाल इत्यादि जैसे शहर सम्मिलित थे। इसलिए, चच द्वारा स्थापित विशाल साम्राज्य सिर्फ उनके जीवनकाल तक ही रहा था। उनके बाद, यह राजा दहर के अधीन, विशेष रूप से अरब हमलों के बाद, एक छोटे राज्य तक ही सीमित रह गया था।

एक सैन्य-प्रमुख के रूप में, कासिम सिंधु घाटी तक देबाल शहर के थलीय क्षेत्र को घेरकर पहुंच गया था। अतिरिक्त युद्ध सामग्री उस तक समुद्र के रास्ते से पहुंची थी। देबाल सिंधु नदी के मुहाने पर एक बड़ा शहर था जिस पर राजा दहर के प्रतिनिधि (lieutenant) का शासन था। इसके बाद, सेनाएं ऊपरी सिंधु घाटी की ओर बढ़ गईं। वे नीरून (पाकिस्तान में आज के हैदराबाद के निकट) पहुंच गईं और उसने शांतिपूर्ण तरीके से आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद अनेक अन्य क्षेत्रों जैसे साड्सान, सुवान्द्री, बस्मद आदि पर कब्ज़ा कर लिया गया था। अंत में, कासिम सिंधु नदी को पार करके स्वयं दहर से निपटना चाहता था। अपनी तरफ से दहर और उसकी सशक्त सेना ने कई दिनों तक वीरतापूर्वक हमलावरों से युद्ध किया। लेकिन उसे अरब सेनाओं द्वारा बुरी तरह हराया और मार दिया गया। इसके बाद ब्राह्मनाबाद की राजधानी और अलोर पर भी कब्ज़ा कर लिया गया। आगे उत्तर में सिंधु के पूर्वीतट की ओर बढ़ते हुए कासिम का लक्ष्य मुलतान पर विजय करना था। *चचनामा* में उल्लेख है कि हज्जाज ने कासिम को अंतिम लक्ष्य के रूप में मुलतान पर कब्ज़ा करने का निर्देश दिया था।

सिद्धांत और नीति के अनुसार, सिंध में एक के बाद एक श्रृंखलाबद्ध विजय प्राप्त करने के बाद कासिम की इस विजय से आम जनता का इस्लाम में सामूहिक रूप से धर्म परिवर्तन नहीं हुआ। यद्यपि अरबों की देबाल और मुलतान की विजयों के बाद जनसंहार हुआ था लेकिन एलोर, नीरून, सुराष्ट, सावन्द्री इत्यादि के उदाहरण थे जहाँ विजेता और पराजितों के बीच बातचीत और समझौते हुए थे। एलोर में कासिम द्वारा व्यवहार में लाए जाने वाले उदारता और धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्धांतों ने विजयी इस्लाम के भारत के धर्म और संस्कृति के साथ सह-अस्तित्व के लिए राह बनाई। जैसा कि *चचनामा* में कहा गया है, कासिम ने पराजित जनता के प्रति उदारता की नीति अपनायी। उसने ब्राह्मणों और बौद्ध जनों, दोनों को, धार्मिक स्वतंत्रता की अनुमति दी। उसने दोनों धर्मों के पुरोहितों के विशेषाधिकारों को

संरक्षित रखा। यह कासिम द्वारा ब्राह्मणों को विशेषाधिकार देने की भारतीय सामाजिक परंपरा के समर्थन को दर्शाता है। वास्तव में, *चचनामा* में उल्लेख है कि वह ब्राह्मणों को 'भले और भरोसेमंद' जन कहता था और ब्राह्मनाबाद की घेराबंदी के बाद उन्हें उन्हीं पदों पर पुनः नियुक्त कर दिया गया जिनपर वे हिंदू राजवंश में थे। यहीं नहीं, इन पदों को उसके द्वारा वंशागत बना दिया गया। आम जनता को भी अपनी मर्ज़ी से पूजा-पाठ करने की अनुमति थी, पर उन्हें अरबों को वही कर देने होते थे जो वे राजा दहर को दिया करते थे। संक्षेप में, उसने सिंध की सामाजिक व्यवस्थाओं में हस्तक्षेप नहीं किया और उनके क्षेत्रों में शांति बनाए रखने के लिए सहमत हो गया था। ये नीति कासिम द्वारा हज्जाज के निर्देशों के तहत अपनायी गई थी, जो जनता को धार्मिक स्वतंत्रता देने का पक्षधर था। इसलिए, जैसा कि *चचनामा* में कहा गया है, कासिम ने ब्राह्मनाबाद को व्यवस्थित और शांतिपूर्ण स्थिति में छोड़ा था और उत्तर की ओर एलोर चला गया था। लचीलेपन और उदारता की यह नीति विजय के आरंभिक काल में इस्लाम की विशेषता थी और उसके समर्थक इसे अपनाते थे।

मोहम्मद बिन कासिम की मृत्यु

इस वीर सेना-प्रमुख का अंत दुखद था। उसके अंत को लेकर भिन्न विवरण हैं। *चचनामा* उसकी मृत्यु का कारण राजा दहर की सूर्यदेवी और पलमलदेवी नामक दो कुंआरी पुत्रियों को मानते हैं जिन्हें उनके पिता की मृत्यु के बाद युद्धबंदी के रूप में खलीफा वालिद के पास भेज दिया गया था। अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए उन्होंने कासिम पर अपने साथ बलात्कार करने का आरोप लगाया। इससे खलीफा क्रोधित हो गया और उसने कासिम को तत्काल मार देने का आदेश दिया। उसने आदेश दिया कि वह जहां कहीं भी हो, कासिम को गाय की खाल में सिलकर खलीफा के पास भेजा जाए। उसकी मृत्यु के बाद जब उसका शरीर दोनों पुत्रियों को दिखाया गया तो उन्होंने यह सच बताया कि उन्होंने ऐसा कासिम से अपने पिता को मारने और परिवार को नष्ट करने का बदला लेने के लिए किया था। इसके बाद, उन्हें भी खलीफा द्वारा मृत्युदंड दिया गया।

दूसरी तरफ बालाधुरी की एक अन्य पुस्तक जिसका शीर्षक *'फलत उन बुल्दन'* था, में मोहम्मद कासिम के पतन और मृत्यु का एक पूर्णतः भिन्न कारण बताया गया है। उसमें कहा गया है कि कासिम को खलीफा सुलेमान द्वारा बंदी बनाकर मृत्यु होने तक यातनाएँ दी गई थीं। सुलेमान की मोहम्मद बिन कासिम के चाचा हज्जाज से भयंकर शत्रुता थी।

बालाधुरी का दावा है कि उसकी मृत्यु अरब साम्राज्य में समकालीन राजनीतिक स्थिति से संबंधित थी और खलीफा सुलेमान की प्रतिक्रियाओं से परस्पर संबंधित थीं, जिसने 715 सी.ई. में अपने भाई के बाद गद्दी संभाली थी। खलीफा वालिद का अंध समर्थक होने के कारण हज्जाज ने अपने भाई सुलेमान के विरुद्ध उसका समर्थन किया। वालिद ने सुलेमान के उत्तराधिकार के दावे को उसके बजाय उसके पुत्र को नियुक्त करके रद्द कर दिया और हज्जाज ने वालिद की इस योजना का समर्थन किया। इस प्रकार, सुलेमान उत्तराधिकार के अपने अधिकार से वंचित हो गया और इसलिए वह क्रोधित हो गया, विशेष रूप से बगदाद के शक्तिशाली शासक से क्रुद्ध हो गया। यह घृणा अपने चरण पर तब पहुंच गई जब उम्मयद शहज़ादे ने याज़िद बिन अल-मुहल्लब को शरण दे दी जो हज्जाज द्वारा उत्पीड़न से बचकर आया था। हज्जाज समर्थकों और मुहल्लब समर्थकों के बीच शत्रुता इस प्रकार हुई थी। यह अरब साम्राज्य की समूचे काल खंड में वालिद, सुलेमान और याज़िद-II खलीफाओं के काल में देखी गई थी और यह शत्रुता उम्मैयद साम्राज्य की जड़ों में गहराई से जमी थी जिसमें मुहल्लब और हैबाब समर्थक दोनों ही को निष्ठावान सेवकों के रूप में देखा था।

जब सुलेमान अपने वफ़ादार सेवकों के रूप में मुहल्लबों के साथ सत्ता में आया तो हज्जाज विरोधी प्रतिक्रिया दिखाई दी। इस प्रतिक्रिया ने हज्जाज को बहुत कम प्रभावित किया, क्योंकि उसकी मृत्यु उसकी इच्छानुसार अपने खलीफा वालिद से कुछ पहले हो गई थी। लेकिन इस शत्रुता ने वालिद के वफ़ादार आश्रितों और नातेदारों को निश्चित रूप से प्रभावित किया था। इस प्रतिक्रिया का पहला और सर्वाधिक पीड़ित कुतैबा बिन मुस्लिम था, जिसे नए खलीफा सुलेमान के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उत्पीड़ित किया गया था। कुतैबा को इतिहास के पन्नों में मध्य एशिया के अरब विजेता के रूप में जाना जाता है। इसी प्रकार, अगला पीड़ित हज्जाज का प्रिय मोहम्मद बिन कासिम था। यद्यपि प्रमाण कासिम के उसके द्वारा जीते गए क्षेत्रों में सुलेमान के उत्तराधिकार के अधिकार के रद्द होने की घोषणा को प्रमाणित नहीं करते हैं। लेकिन ऐसा माना जाता है कि कासिम ने हज्जाज के इस आदेश को माना था। इसलिए, हज्जाज और वालिद की मृत्यु के बाद उस पर उम्मीद से अधिक नियति की मार पड़ी। उस मामले में, गाय की खाल में सिलकर लाए जाने की कहानी एक कल्पित वृत्तांत लगती है। प्रचलित प्रथा के अनुसार, संभवतः उसे सिंध सरकार में उसके उत्तराधिकारी याजिद बिन-कब्शा-अस-सक्सांकी द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया था। ऐसा इराक के नए वित्त शासक सालिह बिन अब्द अररहमान के आदेश से हुआ था। अरबी और इस्लाम के क्षेत्र को बढ़ाने के साहसिक अभियानों के चार वर्ष पश्चात् कासिम को वासित में सलाखों के पीछे कैद कर दिया गया। यहीं पर उसे हज्जाज के अन्य रिश्तेदारों के साथ रखा गया था और 715 सी.ई. में उसकी मृत्यु हो जाने तक यातनाएँ दी गई थीं। इस तरीके से महान अरब विजय के लगभग सभी नायकों की उनके विस्तार की दूसरी ओर अंतिम लहर के समय दुःखद नियति इंतजार कर रही थीं।

11.5 अरब प्रशासन

सिंध के क्षेत्र पर विजय प्राप्त कर लेने के बाद अरब प्रकार के प्रशासन को देखा गया था। यह अरब विजेताओं द्वारा जीते गए अन्य क्षेत्रों में उनके द्वारा अपनाए जाने वाले प्रतिरूपों के जैसा ही था। विद्वानों का मत है कि प्रशासन का यह प्रतिरूप बाद वाले तंत्रों से अधिक उदार था। ऐसा मुख्य रूप से इसलिए था क्योंकि आरंभिक शताब्दियों में इस्लामी कानून की विचारधारा इतनी सख़्त नहीं थी जितनी वह बाद में थी। इसी कारण, विश्वभर में मुस्लिम शासन प्रणालियों को बाद की शताब्दियों में तुलनात्मक रूप से अधिक कठोर माना जाता था। भारत में 12वीं से 18वीं शताब्दी तक तुर्की और मुगल शासन को इस रूझान के उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जा सकता है।

इसके विपरीत प्रारंभिक मध्यकाल में अरब शासन अधिक उदार और लचीला था। अरब विजेताओं ने स्थानीय प्रथाओं के हस्तक्षेप न करने की सामान्य नीति अपनायी थी। जैसे अरब प्रशासन तंत्र के निर्माताओं में से एक खलीफ़ा उमर ने अरबों को स्थानीय प्रशासन में हस्तक्षेप करने अथवा अधीनता वाले क्षेत्रों में भू-संपत्ति अर्जित करने की अनुमति नहीं दी थी। यद्यपि जीते गए क्षेत्र के मुख्य सैन्य जनरल को वहां का शासक बनाया जाता था लेकिन वह वहां के नागरिक प्रशासन में हस्तक्षेप नहीं कर सकता था। यह मुख्य रूप से स्थानीय मुखियाओं के हाथ में रहता था जो अधिकतर गैर-मुस्लिम थे। कासिम की दहर पर विजय के बाद बनाई गई ऐसी व्यवस्था को 'ब्राह्मनाबाद व्यवस्था' कहा जाता था। इसमें मुख्य रूप से हिंदूओं के साथ व्यवहार को दर्शाया गया है जिन्हें ''पीपल ऑफ़ द बुक'' अथवा *जिम्मियों* (संरक्षित जन) के रूप में जाना जाता था। यह व्यवस्था मुख्य रूप से हज्जाज ने खलीफ़ा के निर्देशों के तहत बनाई थी। यह कहा गया था कि क्योंकि हिंदू जन खलीफा को कर चुकाने पर सहमत थे अतः उन्हें खलीफा के संरक्षण में लिया गया था। उनको अपने धर्म को अपनाने और अपने देवी-देवताओं की पूजा करने की अनुमति दी गई

थी। साथ ही, अरब शासकों अथवा प्रशासकों को उनकी संपत्ति छीनने की अनुमति नहीं थी। इस प्रकार की उद्घोषणा मुख्य रूप से ब्राह्मनाबाद की जनता की अपने मंदिर की मरम्मत और अपने धर्म को मानने की याचिका के परिणामस्वरूप की गई थी। कासिम से किए गए इस आग्रह को हज्जाज के पास भेजा गया और हज्जाज ने फ़िर इस प्रकार खलीफा से परामर्श किया। खलीफा ने उदारता की नीति को अपनाया जिसे फ़िर हज्जाज और कासिम द्वारा सप्रयास आगे बढ़ाया गया। कासिम की ब्राह्मणों और मूल स्थानीय परंपरा के प्रति उदारता की नीति के ऊपर बताए गए उदाहरणों को इसको ध्यान में रखते हुए समझा जा सकता है।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित का मिलान कीजिए –

	व्यक्ति	**जाना जाता है**
i)	पलमलदेवी	उम्मैयद जनरल
ii)	मोहम्मद बिन कासिम	बगदाद का शासक
iii)	अल-हज्जाज	वालिद का भाई
iv)	सुलेमान	श्राजकुमारी

2) मोहम्मद बिन कासिम की मृत्यु के विषय में *चचनामा* के वृत्तांत पर चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

11.6 सिंध पर विजय : बग़ैर परिणामों की जीत?

सिंध पर अरब विजय को स्टेनली लेन पूल, एल्फिंसटन इत्यादि जैसे विद्वानों ने 'बग़ैर परिणामों की जीत' कहा है क्योंकि इसमें मुस्लिम, अरबों और भारतीय शासकों में से किसी की भी कोई बड़ी विजय नहीं हुई थी। उनका मत है कि अरब की जीत का भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास पर कोई प्रभाव अथवा परिणाम नहीं हुआ था। वह शेष भारत की राजनीतिक अथवा सैन्य स्थितियों को प्रभावित नहीं कर सकी थी। अरब शासन सिर्फ सिंध क्षेत्र में सीमित था और भारतीय शासक अरबों को अपने सीमांत क्षेत्रों से बाहर निकाले अथवा उनसे डरे बग़ैर अपने राज्यों पर शासन करते थे। अरबों का प्रभाव उपमहाद्वीप के एक छोटे भाग तक सीमित था। वे तुर्कों के विपरीत भारतीय उपमहाद्वीप में अपने पैर नहीं जमा पाए थे, जिन्होंने कुछ शताब्दियों बाद ही अपनी पूर्ण सल्तनत (अर्थात् 12वीं शताब्दी से शुरू दिल्ली सल्तनत) स्थापित कर ली थी।

इस मत की आलोचना करने वाले विद्वानों ने इसके खंडन के लिए अनेक तर्क दिए हैं। उनका मानना है कि भले ही विजय का भारत के राजनीतिक भूगोल पर खास प्रभाव नहीं पड़ा था, लेकिन इसका दोनों पक्षों पर निश्चित रूप से राजनीतिक असर हुआ था। जैसा कि स्रोतों से पता चलता है, मुहम्मद बिन कासिम उतना ही कुशल प्रशासक था जितना

कुशल योद्धा था। अपनी विजयों के बाद उसने क्षेत्र की कानून व्यवस्था को बनाए रखा था और वह मुस्लिम शासन के तहत् अच्छा प्रशासन देने में यकीन रखता था। गैर-मुस्लिमों के साथ उसके द्वारा की गई व्यवस्थाओं ने उपमहाद्वीप में बाद में मुस्लिम राज्य नीति प्रदान करने का आधार बनाया। अपने चाचा हज्जाज के कुशल मार्गदर्शन में उसने पराजित जनता को सामाजिक-सांस्कृतिक और धार्मिक स्वतंत्रता दी थी। जब तक इस्लामी कानून को बनाया जा रहा था, तब तक मूर्ति पूजकों के लिए सख़्त प्रावधान दिए गए थे। इन प्रावधानों को हिंदुओं द्वारा क्यों नहीं अपनाया जाता था इसका कारण मुख्य रूप से कासिम की उदारवादी नीतियाँ थीं। उसने मूल देसी रीति-रिवाजों और परंपराओं को अक्षुण्ण रखने के लिए राजनीतिक कुशाग्रता का प्रदर्शन किया। न ही उसने गैर-मुस्लिमों को बलात मुसलमान बनाया और न ही सामाजिक व्यवस्थाओं जैसे *जाति* प्रथा को खत्म किया। इस प्रकार *जाति* प्रथा अप्रभावित रही और पहले के समान ही अपनायी जाती रही।

इस प्रकार की प्रथाओं के पाए जाने से अरब और मुस्लिम जगत को भारतीय सामाजिक और राजनीतिक तंत्रों की कमज़ोरियों का पता चला। इसलिए, सामाजिक ताने.बाने में इन दरारों का उपयोग उनके द्वारा अपने लाभ के लिए किया गया। जैसे कि पहले चर्चा की गई है, संभवतः ब्राह्मनाबाद के ब्राह्मणों को उनके द्वारा भरोसेमंद व्यक्ति माना गया जिससे अरबी राज्य-व्यवस्था और प्रशासन को चलाने में उनका पूर्ण सहयोग मिलता रहे। निःसंदेह, अरब हमले ने भारत की राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित नहीं किया था, लेकिन इसने निश्चित रूप से क्षेत्र की सामाजिक कमज़ोरियों को उजागर किया। इनका उपयोग हमलावरों द्वारा कुछ शताब्दियों बाद किया गया।

साथ ही, भारतीय और अरब संस्कृतियों के बीच सांस्कृतिक मेल का प्रभाव विभिन्न अन्य क्षेत्रों जैसे साहित्य, चिकित्सा, गणित, खगोल विज्ञान इत्यादि पर भी दिखाई दिया। बौद्धिक स्तर पर ऐसे संपर्कों से दोनों संस्कृतियों की परस्पर वृद्धि और विकास हुआ। पहला अभिलेखित हिंद. अरब बौद्धिक संपर्क 771 सी.ई. में हुआ था जब एक हिंदू खगोल विज्ञानी और गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त की *ब्रह्म सिद्धांत* नामक संस्कृत पुस्तक के साथ बगदाद पहुंचे। इस पुस्तक का एक अरब गणितज्ञ के द्वारा अरबी में अनुवाद किया गया था जिसे *सिंध हिंद* नाम दिया गया। इसका अरब खगोल विज्ञान के विकास पर अत्यधिक प्रभाव हुआ यद्यपि गणित की तीन अन्य पुस्तकों का भी अरबी में अनुवाद किया गया था। गणित में भारतीय संस्कृति का अरब विद्वता पर सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान अरबी अंकों का था।

इसी प्रकार, अरबों द्वारा भारतीय चिकित्सा शास्त्र पर और भी अधिक ध्यान दिया गया था। कम से कम 15 संस्कृत पुस्तकों का अनुवाद किया गया जिसमें चरक और सुश्रुत की भी थीं। भारतीय चिकित्सकों को बगदाद में अत्यधिक आदर और सम्मान दिया जाता था और इसलिए काफ़ी संख्या में भारतीय चिकित्सक वहां पाए जाते थे। मनका एक ऐसे ही चिकित्सक थे जिन्होंने बीमार खलीफा हारून-अल-राशिद का उपचार करके यश और धन कमाया था। इसके साथ ही, ज्योतिष और हस्त रेखाशास्त्र ने भी अरबों का ध्यान आकर्षित किया और इन क्षेत्रों की अनेक पुस्तकों का अरबी में अनुवाद किया गया। इन्हें भी अरब इतिहास लेखनों में संरक्षित रखा गया है। अन्य अनुवाद शासन कला, युद्ध कौशल, तर्क शास्त्र, नीति शास्त्र, जादू इत्यादि के क्षेत्रों से थे। इसी प्रकार, *पंचतंत्र* की प्रसिद्ध पुस्तक का अरबी में अनुवाद हुआ और अरबी में उसे कलीला और दिमना की कहानी के रूप में जाना गया।

भारतीय संगीत का अरबी संगीत पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा था। यद्यपि इसकी किसी पुस्तक का अनुवाद नहीं पाया गया है। जाहिज़ नामक अरबी लेखक ने अपनी पुस्तक में बगदाद में भारतीय संगीत को मिले सम्मान के विषय में लिखा है। उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप की

जनता के संगीत को आनंददायक कहा है। भारतीय संगीत पर एक अन्य ऐसा संदर्भ एक अन्य अरब लेखक का है जिसने लय/धुनों और तरंगों पर भारतीय पुस्तक की बात की है। कुछ विद्वानों द्वारा यह सुझाया गया है कि अरबी संगीत के अनेक तकनीकी शब्द, फ़ारस और भारत से लिए गए हैं। इसी प्रकार, भारतीय संगीत में अनेक फ़ारसी-अरबी लय/तान हैं जैसे *येमन* और *हिज्ज*।

अरबी पुस्तकों में भारतीय और अरबी संस्कृतियों के बीच के रिश्तों पर इतनी जानकारी उपलब्ध होने के कारण यह कहना अतार्किक होगा कि सिंध पर अरब की विजय बग़ैर परिणामों की जीत थी। दूसरे शब्दों में, सिर्फ राजनीतिक परिणामों को ही महत्त्व देना और सामाजिक-सांस्कृतिक अथवा अन्य प्रभावों या परिणामों की अनदेखी करना गलत होगा।

बोध प्रश्न 3

1) सिंध की विजय के परिणामों पर औपनिवेशिक तर्क क्या हैं?

....

....

....

....

....

2) प्रारंभिक मध्यकालीन युग में भारतीयों और अरबों के बीच सांस्कृतिक संपर्कों पर चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

11.7 सारांश

आरंभिक मध्यकाल में इस्लाम के उदय के विश्वभर में दूरगामी राजनीतिक, सामाजिक. आर्थिक और सांस्कृतिक तात्पर्य थे। भारतीय उपमहाद्वीप के साथ 8वीं शताब्दी में इसके पहले संपर्क को अधिकतर फ़ारसी पुस्तक *चचमाना* से जाना जाता है। यह एक ऐसा स्रोत है जिसमें सामान्य रूप से सिंध के इतिहास को बताया गया है। लेकिन, इसकी औपनिवेशिक समझ भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लाम की उत्पत्ति की थी। इसे सिर्फ इस्लाम के उदय अथवा सिंध की विजय के एक स्रोत के रूप में देखने की प्रवृत्ति इस समझ से निकली है ओर इसको समकालीन इतिहास लेखकों द्वारा व्यापक रूप से नकार दिया गया है। वे विजय के विवरण को सिर्फ इसके एक आयाम के रूप में देखते हैं। यह पुस्तक सामान्य रूप से सिंध के इतिहास का वर्णन करती है।

विजय के वर्णनात्मक विवरण में युवा सेना-प्रमुख मुहम्मद बिन कासिम की चर्चा है, जिसने बहादुरी से सिंध क्षेत्र पर विजय प्राप्त की। पुस्तक में पराजित हिंदू जनता के प्रति इस

मुस्लिम विजेता की उदार और सहिष्णु सोच का वर्णन है। लेकिन इसका उदय और पतन भी खलीफा के साथ इसके संबंधों पर निर्भर था तथा खलीफा के बदलने पर इसका और अनेक अन्य कुशल और भरोसेमंद अरब विजेताओं का पतन हो गया। खलीफा के दरबार में इस प्रकार की राजनीति ने भारतीय उपमहाद्वीप में और समूचे विश्व में अरब विजय की नियति को प्रभावित किया। अरब साम्राज्य के भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में ही सीमित रहने को इसके परिप्रेक्ष्य में समझा जाना चाहिए।

अरब विजेताओं और सिंध के शासकों की भारत में अपने प्रभाव को बढ़ाने की अक्षमता को उनकी पूर्ण असफलता के रूप में नहीं देखा जा सकता है। सिंध पर उनकी विजय को इसके प्रकाश में महज बग़ैर परिणाम की जीत कहकर कम करके नहीं आंका जा सकता है। भले ही अरब भारत में राजनीतिक स्थिति को प्रभावित नहीं कर पाए, लेकिन उन्होंने निश्चित रूप से भारतीय संस्कृति को अनेक अन्य तरीकों से प्रभावित किया था। भारतीय और अरब संस्कृतियों की सांस्कृतिक निकटता की उनके साहित्य, चिकित्सा शास्त्र, गणित, खगोल विज्ञान इत्यादि पर निश्चित रूप से छाप थी। कुल मिलाकर मुस्लिम तुर्कों जैसे महमूद ग़ज़नी और मुहम्मद गौरी द्वारा क्रमशः 11वीं और 12वीं शताब्दी में भारत पर सफल हमलों को 8वीं शताब्दी में सिंध की विजय द्वारा तैयार की गई पृष्ठभूमि के चरमोत्सकर्ष के रूप में देखा जा सकता है।

11.8 शब्दावली

परिरोधन (Containment) : किसी के विस्तार को रोकने की क्रिया।

व्युत्पत्ति विज्ञान (Etymology) : स्रोतों और विकास का अध्ययन।

के सापेक्ष (Vis-a-vis) : तुलना में।

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 12.3 देखें।
2) भाग 12.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) | | |
|---|---|
| पलमलदेवी | राजकुमारी |
| मुहम्मद बिन कासिम | उम्मैयद सैन्य-प्रमुख |
| अल.हज्जाज | बगदाद का शासक |
| सुलेमान | वालिद का भाई |

2) भाग 12.4 देखें।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 12.5 देखें।
2) भाग 12.5 देखें।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

11.10 संदर्भ ग्रंथ

आसिफ, मनन अहमद (2016) *ए बुक ऑफ़ कॉन्क्वेस्ट : द चचनामा एंड मुस्लिम ओरिज़िन्स इन साउथ एशिया।* केम्ब्रिज : हावर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

चट्टोपाध्याय, बी.डी. (1994) : *द मेकिंग ऑफ़ द अर्ली मेडिवल इंडिया।* नई दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

फ्राइडमैन, योहानन ''द ओरिज़िंस एंड सिग्निफिकेंस ऑफ़ द चचनामा'', *अकेडमिया.एडू.*

द इम्पैक्ट ऑफ़ द अरब्स : http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00islamlinks/ikram/part1_01.html

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY